

कोड- HVL-S301

प्रश्न-पत्र का नाम- वैदिक प्रबन्धन

समय- 3 घण्टे

अधिकतम अंक-70

नोट- प्रश्न-पत्र दो खण्डों ए एवं बी में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड निर्देशानुसार हल करना अनिवार्य है।

खण्ड 'ए'

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट- किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर 150 शब्दों में दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

- प्रश्न 01 कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि। श्लोक की व्याख्या करो।  
 प्रश्न 02 नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः। श्लोक की व्याख्या करो।  
 प्रश्न 03 'यज्ञात्भवति पर्जन्यः' - गीतोक्त वचन की व्याख्या करो।  
 प्रश्न 04 'बुद्धिनाशात्प्रणश्यति'- गीतोक्त वचन की व्याख्या करो।  
 प्रश्न 05 गीता में वर्णित स्वप्रबन्धन की कौन- कौन सी विधियां हैं, स्पष्ट करो।  
 प्रश्न 06 आत्म-प्रबन्धन पर उपनिषदों के अनुसार निबन्ध लिखो।  
 प्रश्न 07 यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते। श्लोक की व्याख्या करो।  
 प्रश्न 08 'मानसिक स्वास्थ्य प्रबन्धन और श्रीमद्भगवद् गीता' विषय पर निबन्ध लिखो।  
 प्रश्न 09 'मानसिक स्वास्थ्य प्रबन्धन और उपनिषद् साहित्य' विषय पर निबन्ध लिखो।  
 प्रश्न 10 श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार त्रिविध नरक के द्वारों की विवेचना करो।

खण्ड 'बी'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट- किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विस्तृत रूप में दीजिये। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

- प्रश्न 01 स्थितप्रज्ञ को श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार परिभाषित करते हुए विवेचित करो।  
 प्रश्न 02 यज्ञ की महत्ता पर श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार प्रकाश डालो।  
 प्रश्न 03 आत्मा की अमरता को सप्रमाण सिद्ध करो।  
 प्रश्न 04 श्रीमद्भगवद् गीता में प्रोक्त कर्म सिद्धान्त पर निबन्ध लिखो।  
 प्रश्न 05 श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार दैवी सम्पद् की व्याख्या करो।  
 प्रश्न 06 श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार आसुरी सम्पद् की सप्रमाण विवेचना करो।  
 प्रश्न 07 श्रीमद्भगवद् गीता का अध्याय परक परिचय एवं महत्त्व स्पष्ट करो।  
 प्रश्न 08 स्वप्रबन्धन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालो।